Toppersnotes
Unleash the topper in you

# MP-TET

## शिक्षक पात्रता परीक्षा

**MADHYA PRADESH PROFESSIONAL EXAMINATION BOARD**

उच्च प्राथमिक स्तर (विज्ञान वर्ग)

भाग – 1

हिंदी

SIERRA INNOVATIONS

# हिन्दी व्याकरण


1. हिन्दी भाषा 1
2. हिन्दी साहित्य 2
3. वर्णमाला 11
4. विराम चिन्ह 18
5. शब्द भेद 19
6. संधि 28
7. समास 37
8. संज्ञा से अव्यय तक 42
9. अलंकार 52
10. रस 58
11. छन्द 63
12. पर्यायवाची शब्द 67
13. विलोम शब्द 69
14. अनेक शब्दों के लिए एक शब्द 71
15. वर्तनी 74
16. प्रमुख लेखक व उनकी रचनाएँ 76
17. मुहावरे एवं लोकोक्ति 82


## भाषा विकास का अध्यापन


1. भाषा अधिगम एवं अर्जन 113
2. भाषा कौशल 119
3. शिक्षक सहायक सामाग्री 123
4. उपचारात्मक शिक्षण 124

Toppersnotes
Unleash the topper in you

# हिन्दी भाषा (मुख्य तथ्य)

⇒ हिन्दी की आदि जननी संस्कृत है।

⇒ संस्कृत, पालि, प्राकृत भाषा से होती हुई अपभ्रंश तक पहुँचती है।

हिन्दी का विकास क्रम :

संस्कृत → पालि → प्राकृत → अपभ्रंश → अवहट्ट → प्राचीन हिन्दी

⇒ 'हिन्दी' शब्द मूलत: फारसी का है न कि हिन्दी भाषा का।

⇒ 'हिन्दी' शब्द के दो अर्थ हैं – 'हिन्द देश के निवासी' और हिन्द की भाषा

⇒ प्रमुख रचनाकार –

⇒ खड़ी बोली का प्रारम्भिक रूप सरहपा आदि सिद्धों, गोरखनाथ आदि नाथों, अमीर खुसरो जैसे सूफियों, जयदेव, नामदेव, रामानन्द आदि संतों की रचनाओं में उपलब्ध है।

⇒ ब्रजभाषा के रचनाकार – (सूरसागर) सूरदास, रसखान, मीराबाई आदि प्रमुख कृष्ण भक्त कवियों ने ब्रजभाषा के साहित्यिक विकास में अमूल्य योगदान दिया है।

⇒ अवधी – कुतुबन (मृगावती), जायसी (पद्मावत), मंझन (मधुमालती), उसमान (चित्रावली)।

⇒ राजभाषा एक संवैधानिक शब्द है।

⇒ प्रत्येक वर्ष 14 sep. को हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाता है।

- संविधान में भाषा विषयक उपबंध भाग 17 (राजभाषा) के अनु. 343 से 351 तक एवं 8 वीं अनुसूची में दिए गए हैं।
- हिन्दी भाषा के मानकीकरण की दृष्टि से द्विवेदी युग सर्वाधिक महत्वपूर्ण युग था।

## हिन्दी साहित्य (मुख्य तथ्य)

**काव्य**

- आदिकाल (650 ई.-1350 ई.)
- पूर्वमध्य काल/भक्ति काल (1350-1650 ई.)
- रीतिकाल (उत्तरमध्यकाल) (1650-1850 ई.)
- आधुनिक काल (1850 से अब तक)
  - भारतेन्दु युग (1850-1900 ई.)
  - द्विवेदी युग (1900-1920 ई.)
  - छायावाद युग (1918-1936 ई.)
  - छायावादोत्तर युग (1936 ई. से बाद)

Toppersnotes
Unleash the topper in you

## (1) आदिकाल (650 ई. - 1350 ई.)

- हिन्दी साहित्य के विभिन्न कालों के नामकरण का प्रथम श्रेय जार्ज ग्रियर्सन को है।
- आदिकाल को ग्रियर्सन ने 'चारण काल', मिश्रबंधु ने 'प्रारंभिक काल', महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 'बीजवपन काल', शुक्ल ने 'आदिकाल: वीरगाथाकाल', राहुल सांकृत्यायन ने 'सिद्ध-सामंत काल', राम कुमार वर्मा ने 'संधिकाल', हजारी प्रसाद द्विवेदी ने 'आदिकाल' की संज्ञा दी है।
- इस काल में 'आल्हा' छंद बहुत प्रचलित था। यह वीर रस का बड़ा ही लोकप्रिय छंद था।

⇒ आदिकालीन रचना व रचनाकार–

| | रचना | | रचनाकार |
|---|---|---|---|
| 1) | खुमान रासो | — | दलपति विजय |
| 2) | बीसलदेव रासो | — | नरपति नाल्ह |
| 3) | हम्मीर रासो | — | शार्ङ्गधर |
| 4) | पृथ्वीराज रासो | — | चन्दबरदाई |
| 5) | कीर्तिलता | — | विद्यापति |
| 6) | पउमचरिउ | — | स्वयम्भू |
| 7) | मृगावती | — | कुतुबन |
| 8) | परमाल रासो | — | जगनिक |

## (2) पूर्व मध्यकाल / भक्तिकाल (1350 - 1650 ई.)

- भक्तिकाल को 'हिन्दी साहित्य का स्वर्ण काल' कहा जाता है।
- भक्ति काव्य की दो काव्य धाराएँ हैं –

(1) निर्गुण काव्य धारा → ज्ञानाश्रयी, प्रेमाश्रयी

(2) सगुण काव्य धारा → कृष्णाश्रयी, रामाश्रयी

Toppersnotes
Unleash the topper in you

# भक्तिकालीन रचना व रचनाकार

| रचना | | रचनाकार |
|---|---|---|
| 1) साखी | — | कबीरदास |
| 2) बीजक | — | कबीरदास |
| 3) पद्मावत | — | मलिक मुहम्मद जायसी |
| 4) अखरावट | — | " |
| 5) आखिरी कलाम | — | " |
| 6) सूरसागर | — | सूरदास |
| 7) सूरसारावली | — | " |
| 8) साहित्य लहरी | — | " |
| 9) श्रीराम-चरितमानस | — | गोस्वामी तुलसीदास |
| 10) विनय पत्रिका | — | " |
| 11) कवितावली | — | " |
| 12) गीतावली | — | " |
| 13) दोहावली | — | " |
| 14) कृष्ण गीतावली | — | " |
| 15) रामलला नहछू | — | " |
| 16) पार्वती मंगल | — | " |
| 17) जानकी मंगल | — | " |
| 18) बरवै रामायण | — | " |
| 19) मधुमालती | — | मंझन |
| 20) मृगावती | — | कुतबन |
| 21) रामचन्द्रिका | — | केशवदास |
| 22) राम आरती | - | रामानंद |
| 23) प्रेमवाटिका | - | रसखान |
| 24) दानलीला | - | " |
| 25) सुदामा-चरित | - | नरोत्तमदास |

## 3. उत्तरमध्यकाल / रीतिकाल (1650-1850 ई.)

- इसे मिश्र बंधु ने 'अलंकृत काल', रामचन्द्र शुक्ल ने 'रीतिकाल', और विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने 'श्रृंगार काल' कहा है।
- रीतिकाल की दो मुख्य प्रवृत्तियाँ थी -
(1) रीति निरूपण (2) श्रृंगारिकता

⇒ रीतिकाल की रचना एवं रचनाकार -

| | रचना | रचनाकार |
|---|---|---|
| 1) | रामचन्द्रिका | केशवदास |
| 2) | रसिक प्रिया | केशवदास |
| 3) | नखशिख | " |
| 4) | सतसई | बिहारी |
| 5) | शिवराज भूषण | भूषण |
| 6) | शिवा बावनी | " |
| 7) | छत्रसाल दशक | " |
| 8) | पिंगल | चिन्तामणि |
| 9) | नरसीजी का मायरा | मीराबाई |
| 10) | रागगोविन्द | " |
| 11) | प्रेमवाटिका | रसखान |
| 12) | गंगालहरी | पद्माकर |

## 4. आधुनिक काल

### (1) भारतेन्दु युग -

- भारतेन्दु युग का नाम भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जी के नाम पर पड़ा।

भारतेन्दु युगीन रचना व रचनाकार —

| रचना | | रचनाकार |
|---|---|---|
| 1) प्रेम-माधुरी | — | भारतेन्दु हरिश्चन्द्र |
| 2) प्रेम सरोवर | — | " |
| 3) प्रेम-तरंग | — | " |
| 4) उर्दू का स्यापा | — | " |
| 5) प्रेमाश्रु वर्णन | — | " |
| 6) शृंगार विलास | — | प्रताप नारायण मिश्र |
| 7) प्रेमपुष्पावली | — | " |
| 8) मन की लहर | — | " |
| 9) ऋतुसंहार (अ०) | — | जगमोहन सिंह |
| 10) मेघदूत (अ०) | — | " |

## (2) द्विवेदी युग (1900 ई.–1920 ई.)

- इस कालखंड के पथ प्रदर्शक, विचारक और साहित्य नेता आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के नाम पर इसका नाम द्विवेदी युग रखा गया है।
- द्विवेदी युग को 'जागरण सुधार काल' भी कहा जाता है।
- मैथिलीशरण गुप्त ने दो नारी प्रधान काव्य – 'साकेत' व 'यशोधरा' की रचना की।

⇒ द्विवेदी युगीन रचना व रचनाकार —

| रचना | | रचनाकार |
|---|---|---|
| 1) गंगावतरण | — | जगन्नाथदास 'रत्नाकर' |
| 2) उद्धवशतक | — | " |
| 3) गंगालहरी | — | " |
| 4) शृंगारलहरी | — | " |
| 5) हिंडोला | — | " |
| 6) वैदेही वनवास | — | अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' |

7) प्रिय प्रवास – अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'
8) चोखे चौपदे – "
9) रसिक रहस्य – "
10) साकेत – मैथिलीशरण गुप्त
11) भारत भारती – "
12) यशोधरा – "
13) रंग में भंग – "
14) जयद्रथ-वध – "
15) पंचवटी – "
16) शकुन्तला – "
17) नहुष – "

③ छायावाद युग (1918-1936 ई.) –

– छायावाद को हिन्दी साहित्य में भक्ति काव्य के बाद स्थान दिया जाता है।

⇒ जयशंकर 'प्रसाद' जी की प्रथम काव्य कृति – उर्वशी (1909 ई.)
– प्रथम छायावाद काव्य कृति – झरना
अंतिम काव्य कृति – कामायनी (1937 ई.)
(सर्वाधिक प्रसिद्ध काव्य कृति)

– कामायनी के पात्र – मनु, श्रद्धा व इड़ा

⇒ छायावादी युगीन रचना व रचनाकार –

| | रचना | रचनाकार |
|---|---|---|
| 1) | कामायनी | जयशंकर प्रसाद |
| 2) | आँसू | " |
| 3) | लहर | " |
| 4) | झरना | " |
| 5) | उर्वशी | " |
| 6) | अनामिका | सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' |
| 7) | परिमल | " |

8) गीतिका – सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'
9) कुकुरमुत्ता – "
10) नये पत्ते – "
11) वीणा – सुमित्रानन्दन पन्त
12) पल्लव – "
13) गुंजन – "
14) युगान्त – "
15) लोकायतन – "
16) कला और बूढ़ा चाँद – "
17) चिदम्बरा – "
18) नीहार – महादेवी वर्मा
19) नीरजा – "
20) सान्ध्यगीत – "
21) दीपशिखा – "
22) यामा – "
23) रश्मि – "

(4) छायावादोत्तर युग (1936 ई. के बाद) –
(प्रगतिवादी, प्रयोगवादी, नयी कविता) –

⇒ रचना एवं रचनाकार

1) रेणुका – रामधारी सिंह 'दिनकर'
2) हुंकार – "
3) कुरुक्षेत्र – "
4) उर्वशी – "
5) हारे को हरिनाम – "
6) नीम के पत्ते – "
7) सीपी और शंख – "
8) आत्मा की आँखे – "

9) हरी घास पर क्षण भर – सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय'

10) आँगन के पार द्वार – " 'अज्ञेय'

11) कितनी नावों में कितनी बार – "

12) कर्णफूल – नरेन्द्र शर्मा

13) गाँधी पंचशती – भवानी प्रसाद मिश्र

14) चाँद का मुँह टेढ़ा है – गजानन माधव 'मुक्तिबोध'

15) भूरी-भूरी खाक धूल – " 'मुक्तिबोध'

16) ठण्डा लोहा – धर्मवीर भारती

17) अन्धा युग – "

18) पथिक – रामनरेश त्रिपाठी

19) ग्राम्यगीत – "

20) जलियाँवाला बाग – सुभद्रा कुमारी चौहान

21) झाँसी की रानी – "

22) मधुकलश – हरिवंशराय 'बच्चन'

23) मधुशाला – "

24) त्रिभंगिमा – "

25) चार खेमे चौंसठ खूँटे – "

26) सतरंगे पंखों वाली – नागार्जुन

27) प्यासी पथराई आँखें – "

28) तुमने कहा था – नागार्जुन

29) फूल नहीं रंग बोलते हैं – केदारनाथ अग्रवाल

30) पंख और पतवार – "

31) युग की गंगा – "

32) संसद से सड़क तक – सुदामा पाण्डेय 'धूमिल'

## ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित हिन्दी साहित्यकार

| रचना | साहित्यकार | वर्ष |
|---|---|---|
| 1) चिदंबरा | पंत | 1968 ई. |
| 2) उर्वशी | 'दिनकर' | 1972 ई. |
| 3) कितनी नावों में कितनी बार | 'अज्ञेय' | 1978 ई. |
| 4) यामा | महादेवी वर्मा | 1982 ई. |

## साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित हिन्दी साहित्यकार

| रचना | साहित्यकार | वर्ष |
|---|---|---|
| हिमतरंगिनी (काव्य) | माखन लाल चतुर्वेदी | 1955 ई० |
| कला और बूढ़ा चाँद (काव्य) | पंत | 1960 ई. |
| कलम का सिपाही (जीवनी) | अमृतराय | 1963 ई० |
| आँगन के पार द्वार (काव्य) | 'अज्ञेय' | 1964 ई० |
| मुक्तिबोध (उपन्यास) | जैनेन्द्र | 1966 ई. |
| नीला चाँद (उपन्यास) | शिवप्रसाद सिंह | 1990 ई. |
| जिंदगीनामा (उपन्यास) | कृष्णा सोबती | 1980 ई. |
| दो चट्टानें (काव्य) | हरिवंशराय 'बच्चन' | 1968 ई. |
| भूले-बिसरे चित्र (उपन्यास) | भगवतीचरण वर्मा | 1961 ई. |

# वर्णमाला

- भाषा की सार्थक इकाई वाक्य है।

**अवरोही क्रम –**

वाक्य → उपवाक्य → पद बंध → पद → अक्षर → ध्वनि या वर्ण

**वर्ण –** भाषा की सबसे छोटी इकाई ध्वनि है इस ध्वनि को वर्ण कहते हैं।

- हिन्दी के उच्चारण के आधार पर 45 वर्ण (10 स्वर + 35 व्यंजन) एवं लेखन के आधार पर 52 वर्ण (13 स्वर + 35 व्यंजन + 4 संयुक्त व्यंजन) हैं।

**स्वर –** अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, (ऋ), ए, ऐ, ओ, औ, (अं), (अः)

[कुल = 10 + (3) = 13]

**व्यंजन –**

क वर्ग – क, ख, ग, घ, ङ
च वर्ग – च, छ, ज, झ, ञ
ट वर्ग – ट, ठ, ड, (ड़), ढ, (ढ़), ण (द्विगुण व्यंजन = ड़, ढ़)
त वर्ग – त, थ, द, ध, न
प वर्ग – प, फ, ब, भ, म
अंतःस्थ – य, र, ल, व
ऊष्म – श, ष, स, ह

[कुल = 33 + 2 = 35]

**संयुक्त व्यंजन** – क्ष, त्र, ज्ञ, श्र

[कुल = 4]

# स्वर

स्वर : स्वतंत्र रूप से बोले जाने वाले वर्ण 'स्वर' कहलाते हैं।

परम्परागत रूप से – 13

उच्चारण की दृष्टि से – 10

* जिन स्वरों के उच्चारण में कम समय लगता है उन्हे ह्रस्व स्वर कहते हैं जैसे - अ, इ, उ, ऋ।
* जिन स्वरों के उच्चारण में अधिक समय लगता है उन्हे दीर्घ स्वर कहते हैं जैसे - आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ।
* आगत स्वर – ऑ

## स्वरों का वर्गीकरण

① मात्रा / उच्चारण काल के आधार पर –

ह्रस्व स्वर : (अ, इ, उ)

दीर्घ स्वर : (आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, ऑ)

प्लुत स्वर : (रा SSS म)

② जीभ के प्रयोग के आधार पर –

अग्र स्वर : जिन स्वरों के उच्चारण में जीभ का अगला भाग काम करता है जैसे - इ, ई, ए, ऐ।

मध्य स्वर : जिन स्वरों के उच्चारण में जीभ का मध्य भाग काम करता है जैसे - अ।

पश्च स्वर : जिन स्वरों के उच्चारण में जीभ का पश्च भाग काम करता है जैसे - आ, उ, ऊ, ओ, औ, ऑ

③ मुख द्वार से खुलने के आधार पर:

विवृत (Open) : जिन स्वरों के उच्चारण में मुख द्वार पूरा खुलता है। (आ)

अर्द्ध विवृत (Half open) : जिन स्वरों के उच्चारण में मुख द्वार आधा खुलता है (अ, ऐ, औ, ऑ)

अर्द्ध संवृत (Half close) : जिन स्वरों के उच्चारण में मुख द्वार आधा बंद रहता है (ए, ओ)

संवृत (close) : जिन स्वरों के उच्चारण में मुख द्वार लगभग बंद रहता है। (इ, ई, उ, ऊ)

④ ओंठो के स्थिति के आधार पर:

अवृतमुखी – जिनके उच्चारण में ओंठ गोलाकार नहीं होते हैं जैसे – अ, आ, इ, ई, ए, ऐ।

वृतमुखी – जिनके उच्चारण में ओंठ गोलाकार होते हैं जैसे – उ, ऊ, ओ, औ, ऑ।

⑤ हवा के नाक व मुँह से निकलने के आधार पर:

निरनुनासिक / मौखिक स्वर – उच्चारण में हवा केवल मुँह से निकलती है (अ, आ, इ आदि)

अनुनासिक स्वर – हवा मुँह के साथ-साथ नाक से भी निकलती है (अँ, आँ, इँ आदि)

⑥ घोषत्व के आधार पर –

घोष का अर्थ – श्वास का कंपन

– सभी स्वर सघोष ध्वनियाँ होती हैं।

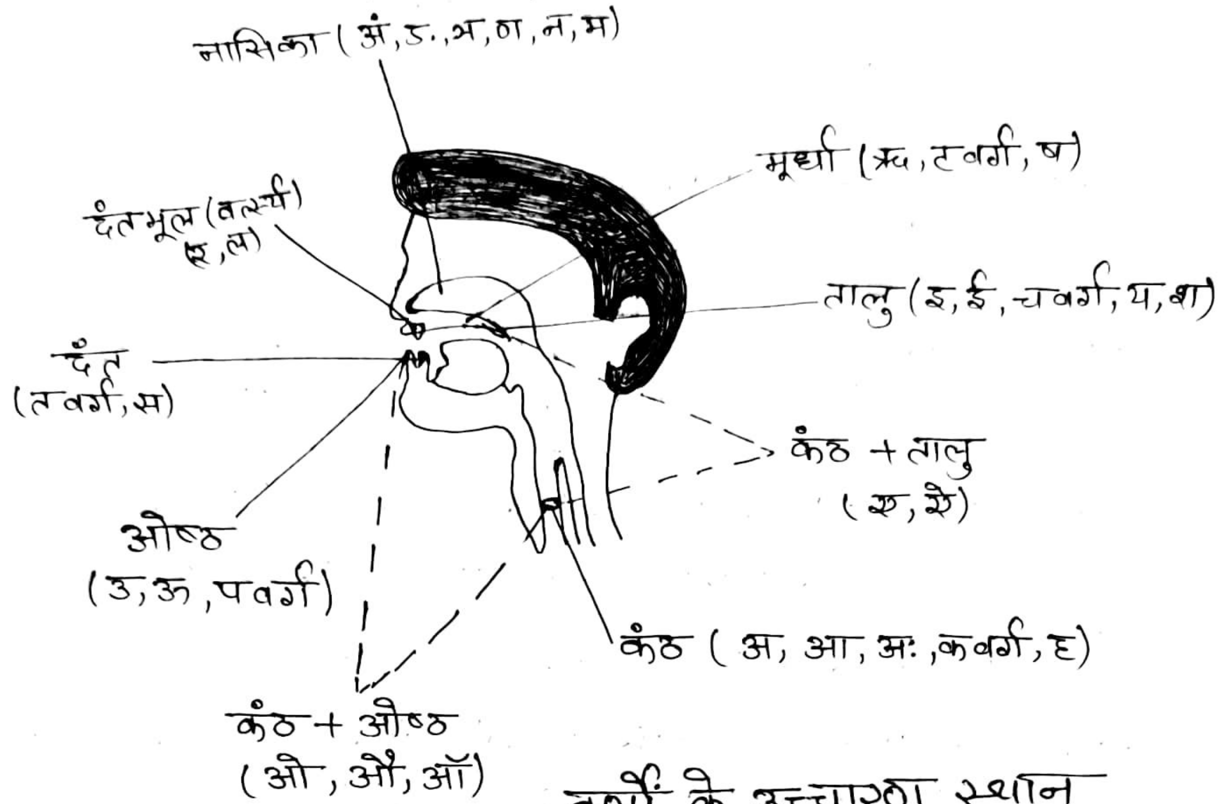


## वर्णों के उच्चारण स्थान

## व्यंजनों का वर्गीकरण

### (1) स्पर्श व्यंजन :

कंठ्य → तालव्य → मूर्धन्य → दन्त्य → ओष्ठ्य
(क वर्ग) (च वर्ग) (ट वर्ग) (त वर्ग) (प वर्ग)

Note (1) कुछ विद्वान 'च' वर्ग को स्पर्श संघर्षी मानते हैं।

(2) घोषत्व के आधार पर :

अघोष – हर वर्ग का पहला व दूसरा व्यंजन

सघोष – हर वर्ग का तीसरा, चौथा व पाँचवा व्यंजन।

(3) प्राणत्व के आधार पर –

अल्प प्राण – जिसमें मुख से कम हवा निकले।
हर वर्ग का पहला, तीसरा व पाँचवा व्यंजन

महा प्राण – जिसमें मुख से अधिक हवा निकले।
– हर वर्ग का दूसरा व चौथा व्यंजन।

(2) अन्तःस्थ व्यंजन :–

| | वर्ग | उच्चारण स्थान | |
|---|---|---|---|
| य | तालव्य | तालु | सघोष, अल्पप्राण |
| र | वर्त्स्य | दंतमूल / मसूढ़ा | |
| ल | वर्त्स्य | " | |
| व | दंतोष्ठ्य | ऊपर के दाँत + निचला होंठ | |

(3) ऊष्म संघर्षी –

| | वर्ग | उच्चारण स्थान | |
|---|---|---|---|
| श | तालव्य | तालु | अघोष, महाप्राण |
| ष | मूर्धन्य | मूर्धा | |
| स | वर्त्स्य | वर्त्स्य | |
| ह | स्वरयंत्रीय | स्वरयंत्रीय | |

Note (1) उत्क्षिप्त व्यंजन

ड़ – मूर्धन्य, सघोष, अल्पप्राण
ढ़ – मूर्धन्य, सघोष, महाप्राण

(2) अर्द्धस्वर – य, व

(3) लुंठित व्यंजन – र

(4) पार्श्विक व्यंजन – ल